Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा: संभावनाएँ और सीमाएँ

रमेश बब्रुवान कदम*
पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय दक्षिण मध्य रेलवे, नांदेड
संशोधन केंद्र : पीपल्स कॉलेज नांदेड

शोध सार

कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा शिक्षण में उच्चारण-सुधार, व्याकरण-जाँच, मूल्यांकन-विश्लेषण, समावेशी शिक्षण और सामग्री-निर्माण जैसी असाधारण संभावनाएँ प्रस्तुत करती है। किंतु हिंदी की सांस्कृतिक आत्मा, भावनात्मक गहराई, मौलिक सृजन, मानवीय संवाद, तकनीकी असमानता और भाषिक विविधता ऐसे पक्ष हैं जहाँ कृत्रिम मेधा की सीमाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

इसलिए आवश्यक है कि हिंदी शिक्षण में कृत्रिम मेधा का प्रयोग नियंत्रित, नैतिक, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और शिक्षक-समीक्षित तरीके से किया जाए, ताकि तकनीक शिक्षण को सशक्त बनाए, प्रतिस्थापित नहीं।

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य, डिजिटल युग, रचनात्मकता, तकनीक और संस्कृति, साहित्यिक मूल्य, मौलिकता, संवेदना, लेखक की भूमिका, भविष्य का साहित्य ।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
रमेश बब्रुवान कदम
Email: rameshkadam69@gmail.com

प्रस्तावना

हिंदी भाषा शिक्षण केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक ऐसा माध्यम है जो छात्रों को एक सशक्त, सुसंस्कृत और राष्ट्रीय रूप से जागरूक नागरिक बनने में मदद करता है। हिंदी भाषा शिक्षण का महत्व छात्रों को अपनी संस्कति से जोड़ना, प्रभावी संचार कौशल विकसित करना,राष्ट्रिय पहचान को मजबूत करना और भारत की भाषाई विविधता में एक सामान्य कड़ी प्रधान करना है,जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके जो उन्हें विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मद्दत करता है |

सूचना-संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के बाद, अब शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रमुख हिस्सा बनती जा रही है। भाषा शिक्षण, विशेष रूप से हिंदी भाषा शिक्षण, कृत्रिम मेधा के प्रभाव से अछूता नहीं है।21वीं सदी में शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी हस्तक्षेप तेज़ी से बढ़ रहा है।भारत में हिंदी केवल एक विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संप्रेषण, सामाजिक संवाद, प्रशासनिक कार्य और साहित्यिक अभिव्यक्ति की प्रमुख भाषा भी है। ऐसे में इसका शिक्षण अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की चुनौती लगातार बनी रहती है।

कृत्रिम मेधा आधारित उपकरण शिक्षण प्रक्रिया को, बहुआयामी, अनुकूलित , स्वचालित , संवादात्मक और विश्लेषण-सक्षम बनाने की क्षमता रखते हैं। किंतु भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा के उपयोग को लेकर भाषिक शुद्धता , भावनात्मक, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, तकनीकी असमानता, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, मौलिक लेखन, डेटा गोपनीयता जैसे प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हैं।यह शोध पत्र हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की संभावनाओं और सीमाओं का विश्लेषण करता है |

2. शोध का उद्देश्य

२.१ कृत्रिम मेधा आधारित भाषा शिक्षण उपकरणों की उपयोगिता का विश्लेषण करना |

२.२ हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की भूमिका और संभावित प्रभावों का अध्ययन करना |

२.३ कृत्रिम मेधा के उपयोग में आने वाली भाषिक, शैक्षणिक, सामाजिक और नैतिक चुनौतियों की पहचान करना |

२.४ हिंदी शिक्षण में कृत्रिम मेधा के प्रभावी और सीमित उपयोग हेतु मार्गदर्शी सुझाव प्रस्तुत करना |

3. शोध प्रश्न

3.1 कृत्रिम मेधा आधारित उपकरण हिंदी भाषा की चारों दक्षताओं (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

3.2 क्या कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकता है?

3.3 हिंदी शिक्षण में कृत्रिम मेधा के उपयोग की प्रमुख सीमाएँ क्या हैं?

3.4 कृत्रिम मेधा और शिक्षक की भूमिका के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है?

4. हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की संभावनाएँ

4.1 उच्चारण सुधार:

हिंदी में उच्चारण शुद्धता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कृत्रिम मेधा आधारित वाक्या पहचान और टेक्स्ट का पठन तकनीक छात्रों को वर्ण, शब्द और वाक्य का सही उच्चारण सुनने और बोलने का अभ्यास प्रदान कर सकती है। यह विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए लाभकारी है जिनके घर या परिवेश में हिंदी का नियमित प्रयोग नहीं होता।

निम्नलिखित में सहायक हो सकता है: उदा : शब्द-बलाघात, स्वर-उतार-चढ़ाव, शुद्ध ध्वनि-उच्चारण का अभ्यास श', 'ष', 'स', 'र', 'ड़', 'ढ़' जैसी ध्वनियों का भेद सिखाना बोली-प्रभाव में सुधार करना |

4.2 वैयक्तिकृत शिक्षण:

विद्यार्थियों की सीखने की गति, त्रुटियों के प्रकार, रुचियों और अधिगम स्तर का विश्लेषण कर प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अलग-अलग अभ्यास, पाठ, प्रश्न और मूल्यांकन तैयार कर सकते है। हिंदी कक्षा में अक्सर यह समस्या होती है कि सभी विद्यार्थी एक समान स्तर पर नहीं होते, जिससे कमजोर विद्यार्थियों को अतिरिक्त अभ्यास की आवश्यकता रहती है, जबकि तेज़ सीखने वाले विद्यार्थियों को अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य चाहिए होते हैं। कृत्रिम मेधा इन दोनों आवश्यकताओं को एक साथ संबोधित कर सकता है।

उदाहरण: उन्नत विद्यार्थियों के लिए मुहावरे, व्याकरणिक विश्लेषण, रचनात्मक लेखन, भाषिक सौंदर्य आधारित कार्य कमजोर विद्यार्थियों के लिए वर्ण-पहचान, मात्रा-अभ्यास, शब्द-निर्माण, वाक्य-संरचना आधारित सरल अभ्यास

4.3 पठन-समझ

आधारित डिजिटल रीडर, स्मार्ट अनुच्छेद विश्लेषक, संदर्भ आधारित प्रश्न-निर्माता, QR कोड हिंदी टेक्स्ट स्कैनर पठन प्रक्रिया को अधिक सशक्त बना सकते हैं। कृत्रिम मेधा अनुच्छेद से CBQ, MCQ, VSA, LA जैसे प्रश्न स्वतः तैयार कर सकता है |जैसा कि KVS/NCERT प्रारूप में अक्सर पूछते हैं, जिससे शिक्षक को दक्षता आधारित मूल्यांकन तैयार करने में सहायता मिलती है।

4.4 लेखन कौशल संवर्धन

कृत्रिम मेधा छात्रों के लेखन में: वर्तनी,वाक्य-संरचना सुधार, व्याकरणिक त्रुटि पहचान,शब्द-भंडार विस्तार जैसे कार्य कर सकता है। इसके अतिरिक्त रचनात्मक लेखन के संकेत , कविता-निर्माण अभ्यास, कहानी-संरचना टेम्पलेट, भाषा-अलंकार अभ्यास भी उपलब्ध करा सकता है।

4.5 मूल्यांकन और विश्लेषण:

हिंदी भाषा शिक्षण में जाँच कार्य अत्यंत समय-साध्य होता है। उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन ,त्रुटियों का वर्गीकरण मात्रा-दोष, वर्तनी-दोष, व्याकरण-दोष, वाक्य-गठन-दोष, विद्यार्थी-वार प्रदर्शन रिपोर्ट, दक्षता-वार ग्राफ और प्रगति विश्लेषण तैयार कर सकता है, जिससे शिक्षक डेटा-आधारित शिक्षण निर्णय ले सकते हैं।

4.6 बहुभाषी अनुवाद और भाषा-सेतु:

कई राज्यों में विद्यार्थी मातृभाषा में सोचते हैं और हिंदी सीखते समय अनुवाद आधारित सहायता की आवश्यकता महसूस करते हैं। कृत्रिम मेधा आधारित अनुवादक उपकरण मातृभाषा हिंदी के बीच तत्काल अर्थ, संदर्भ और प्रयोग उदाहरण उपलब्ध करा सकते हैं, जिससे हिंदी शिक्षण

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

अधिक सुगम बनता है।

4.7 विशेष क्षमता वाले छात्र हेतु समावेशी शिक्षण:

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए हिंदी श्रवण पाठ,श्रवणबाधित विद्यार्थियों के लिए वास्तविक समय कैप्शन और संकेत समर्थित स्पष्टीकरणलेखन में कठिनाई वाले विद्यार्थियों के लिए स्पीच से टेक्स्ट हिंदी लेखन

4.8 शिक्षकों की कार्यक्षमता में वृद्धि:

शिक्षकों को: प्रश्न-पत्र निर्माण, पाठ-योजना, शिक्षक डायरी, चित्र आधारित सामग्री निर्माण, गतिविधि-आधारित अभ्यास में सहायता देकर शिक्षण गुणवत्ता को बढ़ाता है।

5. हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की सीमाएँ

5.1 भाषिक शुद्धता और त्रुटिपूर्ण आउटपुट :

हिंदी में बहुअर्थी शब्द, संदर्भ आधारित अर्थ, लिंग-भेद, कारक-रचना, तत्सम-तद्भव अंतर, हलंत-नियम, संयुक्ताक्षर, मात्रा-नियम और वाक्य में क्रमिक लचीलापन होता है। कई बार: मात्रा या अनुस्वार/अनुनासिक में भ्रम कर देता है | गलत लिंग या कारक का प्रयोग कर देता है,संदर्भ के अनुसार सटीक अर्थ नहीं पकड़ पाता,संस्कृतनिष्ठ हिंदी और बोलचाल की हिंदी में अंतर नहीं कर पाता |

5.2 शिक्षक-विद्यार्थी संबंध :

भाषा शिक्षण में:संवाद, भाव-संचार, प्रेरणा,सामाजिक व्यवहार,सुधारात्मक प्रतिक्रिया का बड़ा योगदान शिक्षक के माध्यम से आता है।

5.3 सांस्कृतिक और संवेदनशील संदर्भ की समझ में कमी:

भाषा केवल व्याकरण नहीं, बल्कि संस्कृति, भाव, व्यवहार, सामाजिक मूल्य, लोकपरंपरा और संवेदनशीलता भी होती है। लोकसंदर्भ, क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रतीक, भावनात्मक अर्थों का गहन विश्लेषण नहीं कर पाता|

5.4 तकनीकी असमानता :

भारत में सभी विद्यार्थियों के पास,तेज़ इंटरनेट,स्मार्ट डिवाइस, उपकरणों की पहुँच

समान रूप से उपलब्ध नहीं है। यह हिंदी शिक्षण को सर्वसमावेशी बनने से रोकता है।

5.5 डेटा गोपनीयता और नैतिक चुनौतियाँ:

आधारित शिक्षण प्रणाली में विद्यार्थी-डेटा संग्रह,व्यवहार-ट्रैकिंग,प्रदर्शन-विश्लेषण होता है, जिससे डेटा सुरक्षा, गोपनीयता और सहमति के प्रश्न उठते हैं।

5.6 मौलिक लेखन और सृजनशीलता पर प्रभाव:

कृत्रिम मेधा लेखन सहायता प्रदान करता है, किंतु इससे विद्यार्थी स्वयं सोचने और लिखने का अभ्यास कम कर सकते हैं,निबंध,कविता,कहानी में मौलिकता घट सकती है |

5.7 कृत्रिम मेधा पर अत्यधिक निर्भरता:

कृत्रिम मेधा सहायक है, विकल्प नहीं। किंतु यदि शिक्षक कृत्रिम मेधा से ही प्रश्न-पत्र, उत्तर-जाँच, पाठ-योजना पूरी तरह बनवाने लगें तो शिक्षक की विषय-दक्षता, मूल्यांकन क्षमता और रचनात्मक कौशल धीरे-धीरे कम हो सकते हैं।

5.8 मानकीकरण बनाम भाषिक विविधता:

कृत्रिम मेधा अक्सर प्रमाणित भाषा को प्राथमिकता देता है, जबकि हिंदी में कई बोलियाँ अवधी, ब्रज, बुंदेली, मैथिली-हिंदी प्रभाव, राजस्थानी-हिंदी प्रभाव, खड़ी बोली, दक्खिनी हिंदी लेखन में शैलीगत विविधता,भाव-संदर्भ की लचक पाई जाती है। कृत्रिम मेधा इस विविधता को सीमा के रूप में देख सकता है, जिससे शिक्षण में एकरूपता बढ़ने का खतरा है।

6. कृत्रिम मेधा और हिंदी की चारों भाषा-दक्षताओं पर प्रभाव:

भाषा-दक्षता कृत्रिम मेधा की भूमिका सीमाएँ सुनना, ऑडियो पाठ, स्वचालित श्रवण अभ्यास भाव-संदर्भ और लोक-ध्वनि में कमी बोलना उच्चारण सुधार, बोली-प्रभाव और सांस्कृतिक लहजे की समझ में कमी पढ़ना OCR, डिजिटल रीडर, CBQ निर्माण गहन संदर्भ-समझ में सीमित क्षमता लिखना व्याकरण , लेखन सुझाव मौलिकता और

रचनात्मकता में कमी का खतरा हो सकता है|

7. सुझाव और समाधान

7.1 संतुलित उपयोग:

कृत्रिम मेधा को सहायक उपकरण की तरह प्रयोग करें, मुख्य शिक्षक की तरह नहीं करना उच्चारण और व्याकरण सुधार में कृत्रिम मेधा का उपयोग बढ़ाएँ| रचनात्मक लेखन में कृत्रिम मेधा का उपयोग मार्गदर्शन तक सीमित रखें, पूरा आउटपुट निर्माण तक नहीं करना चाहिए|

7.2 सांस्कृतिक संदर्भों का मानवीय शिक्षण:

लोक-साहित्य, कहानियाँ, सांस्कृतिक प्रतीक, त्योहार, सामाजिक व्यवहार शिक्षक द्वारा समझाना चाहिए |

7.3 तकनीकी समावेशन सुनिश्चित करना:

विद्यालय स्तर पर कृत्रिम मेधा प्रयोगशाला,स्मार्ट कक्षा,ऑडियो संसाधन उपलब्ध कराए जाना चाहिए | ऑफलाइन कृत्रिम मेधा हिंदी लर्निंग मॉडल विकसित करना चाहिए |

7.4 मौलिक लेखन को बढ़ावा:

कृत्रिम मेधा द्वारा सुधारे गए लेखन के बाद विद्यार्थी से स्व-संपादन और स्व-पुनर्लेखन कराया जाना चाहिए | परीक्षा में कक्षा आधारित लेखन अभ्यास अनिवार्य किया जाना चाहिए |

7.5 डेटा सुरक्षा नीति:

विद्यार्थी डेटा संग्रह में गोपनीयता, सहमति और सुरक्षा मानक लागू करना चाहिए |

7.6 शिक्षक प्रशिक्षण:

हिंदी शिक्षकों को कृत्रिम मेधा उपयोग हेतु तकनीकी और भाषिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए |शिक्षक को कृत्रिम मेधा आउटपुट की समीक्षा, संपादन और प्रमाणिकता जाँच अनिवार्य रूप से करनी चाहिए |

8. संदर्भ

1) भाषा शिक्षण में तकनीकी समावेशन NEP 2020

२) भाषा अधिगम में तकनीकी हस्तक्षेप सिद्धांत

3) शिक्षार्थी-केंद्रित मॉडल NCERT

4) हिंदी शिक्षण संरचना

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)